बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन

श्री शरण
कुँ. अशोक प्रधान

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 81-87779-61-6

© प्रकाशक

मूल्य : 175.00
संस्करण : 2007
प्रकाशक : **अनुराग प्रकाशन**
1/1073-डी, महरौली, नई दिल्ली-110030
चित्रांकन : चंदनसिंह रावत
शब्द संयोजक : **अक्षरायन**
7, हौजखास अपार्टमेंटस, नई दिल्ली - 110016
मुद्रक : विशाल प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली ।

BADHTI JANSHANKHYA GATHTE SANSADHAN

Shri Sharan K. Ashok Pradhan

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

एक	:	पृथ्वी का निर्माण तथा मानव का विकास	9
दो	:	जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधन	11
तीन	:	जनसंख्या वृद्धि तथा ध्वनि प्रदूषण	14
चार	:	कुपोषण का कारण जनसंख्या वृद्धि	17
पाँच	:	छोटे बच्चों से काम कराना क़ानूनी अपराध	19
छह	:	बढ़ती जनसंख्या के लिए शिक्षा का प्रबंध	23
सात	:	देश के नगरों व महानगरों की स्थिति	29
आठ	:	बढ़ती जनसंख्या से नगरों व महानगरों के सौंदर्य को लगता ग्रहण	31
नौ	:	जनसंख्या और प्रदूषित वातावरण	43
दस	:	जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ बढ़ते अपराध	54
ग्यारह	:	जनसंख्या नियंत्रण नीति तथा उसकी विफलता	57
बारह	:	बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन	77
तेरह	:	जनसंख्या वृद्धि और विद्युत समस्या	83
चौदह	:	कटते वन और ईंधन समस्या	90
पंद्रह	:	जनसंख्या वृद्धि और पेय जल संकट	94
सोलह	:	जनसंख्या वृद्धि और सड़क यातायात	98
सत्रह	:	बढ़ती जनसंख्या का प्राकृतिक संसाधनों पर दुष्प्रभाव	102
अठारह	:	बढ़ती जनसंख्या और सुरक्षा व्यवस्था	108
उन्नीस	:	श्रमशक्ति है किंतु काम नहीं	113
बीस	:	जनसंचार एवं दूरसंचार सेवाएँ	118
इक्कीस	:	जनसंख्या नियंत्रण में महिलाओं का सबलीकरण एवं योगदान	121
बाईस	:	परिवार नियोजन कार्यक्रम	125
तेईस	:	कुछ महत्त्वपूर्ण आँकड़े	147

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner